सॉफ्ट ड्रिंक कंपनियों की शुगर डिमांड में कमी के आसार

इस सीजन में शुगर सेल्स 2.38 करोड़ से 2.4 करोड़ टन रहने का अनुमान है

[जयश्री भोसले & रत्नाभूषण । पुणे & नई दिल्ली]

हेल्थ को लेकर शहरी भारत की धुन शुगर इंडस्ट्री के लिए अच्छी खबर नहीं है। वॉल्यूम ग्रोथ में सुस्ती से निपटने के लिए सॉफ्ट ड्रिंक कंपनियों को झुलसती गर्मी का इंतजार है। मौसम विभाग के मुताबिक, इस बार गर्मी की शुरुआत जल्द हो जाएगी और सॉफ्ट ड्रिंक कंपनियों को सुस्त वॉल्यूम ग्रोथ से छुटकार मिल सकेगा। इसके बावजूद शुगर मिलें एग्रीगेट डिमांड में 10 पर्सेंट गिरावट का अनुमान लगा रही हैं क्योंकि शहरों में कम शुगर वाली ड्रिंक का प्रचलन तेज हो रहा है। साथ ही, देश के दूरदराज के इलाकों में ऐसी खरीदारी रुकी हुई है, जिसे लग्जरी माना जाता है।

बेवरेजेज इंडस्ट्री के एक अधिकारी ने बताया, 'इसका असर अब प्रॉडक्शन साइकिल पर दिखना शुरू हो गया है और कच्चे माल की खरीदारी में कमी की जा रही है। शहरी मार्केट्स में स्लोडाउन है, जहां कंज्यूमर्स के पास कई तरह के बेवरेजेज चुनने का ऑप्शन है। मसलन फ्लेवर्ड वॉटर, फ्रेश जूस आदि। दूसरी तरफ, ग्रामीण कंज्यूमर्स कोला जैसी चीजों पर खर्च में कटौती कर रहे हैं।'

फास्ट मूविंग कंज्यूमर गुड्स (एफएमसीजी) कंपनियां थोक भाव में शुगर खरीदती हैं और शुगर की लोकल सेल्स का 70 पर्सेंट है। 14,000 करोड़ रुपये से भी ज्यादा वाली इस इंडस्ट्री की अप्रैल-जून क्वॉर्टर में हिस्सेदारी 40 पर्सेंट से भी ज्यादा होती है।

तमिलनाडु में ट्रेडर्स और दुकानदारों की तरफ से कोला के चल रहे बहिष्कार के कारण मांग में कमी का अनुमान जताया जा रहा है। पेप्सिको अपनी कोल्ड ड्रिंक्स में मांग में ज्यादा उतार-चढ़ाव की संभावना नजर नहीं आती। पेप्सिको इंडिया में वाइस प्रेसिडेंट (बेवरेजेज) विपुल प्रकाश ने बताया, 'हमें इस साल अपनी जरूरतों में अहम बदलाव का अनुमान नजर नहीं आता।' इंडस्ट्री ग्रुप इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन को पिछले साल की 2.48 करोड़ की शुगर खपत के मुकाबले इस सीजन में शुगर सेल्स 2.38 करोड़ से 2.4 करोड़ टन रहने का अनुमान है।

- **शुगर मिलें** एग्रीगेट डिमांड में 10% गिरावट का अनुमान लगा रही हैं क्योंकि शहरों में कम शुगर वाली ड्रिंक का प्रचलन तेज हो रहा
- **दूरदराज के** इलाकों में ऐसी खरीदारी रुकी हुई है, जिसे लग्जरी माना जाता है

इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन की प्रेसिडेंट टी सरिता रेड्डी ने बताया, 'बीते सोमवार को हुई बैठक में सभी मेंबर्स का कहना था कि मार्केट में शुगर की कोई डिमांड नहीं है। साउथ में इसकी वजह तमिलनाडु में कुछ कोल्ड ड्रिंक्स का बहिष्कार है, जबकि देश के बाकी हिस्सों में घरेलू और एफएमसीजी सेगमेंट में मांग में गिरावट है।

इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन के मुताबिक, नोटबंदी, बल्क कंज्यूमर्स द्वारा शुगर की खरीदारी में कमी और कीमतें बढ़ने से मांग प्रभावित होना सेल्स में कमी के कारण हैं।

The Economic Times

10/3/17